P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मध्यकालीन राजस्थान के शिलालेखों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (जैसलमेर के विशेष सन्दर्भ में, 1600–1700 ई.)

ओमप्रकाश भाटी
वरिष्ठ शोध अध्येता,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

मध्यकालीन राजस्थान में जैसलमेर राज्य का महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के शासकों ने अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास को बनाये रखने और उसे समृद्ध करने में अपना भरपूर योगदान दिया हैं। इन शासकों ने अपने विभिन्न योगदानों को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करवाया हैं। शिलालेख शब्द सम्राट अशोक द्वारा पत्थरों तथा चट्टानों पर छोड़े गए लिखित मानव आदर्शों के मिलने के पश्चात प्रचलित हुआ है। सम्राट अशोक के शिलालेख इतिहास की एक स्पष्ट छवि उकेरते हैं तथा एक अहम ऐतिहासिक दस्तावेज माने जाते हैं। ये शिलालेख लंबे समय तक लिखित रचना को सुरक्षित रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनसे हमें इतिहास के बारे में प्रमाणित व सटीक जानकारियों का ज्ञान प्राप्त होता है। शिलालेख ऐतिहासिक घटनाओं के वे प्रामाणिक साक्ष्य हैं, जिन पर सहजता से विश्वास किया जा सकता हैं। ये शिलालेख किले, महल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ, बाग–बगीचे, छत्रियाँ, झरोखे, कुएं, तालाब, सरोवर, झालरे, बावडियाँ, स्तूपों, स्तम्भों, मठों, गुहाओं, खेतों के मध्य स्थित शिलाओं इत्यादि के रूप में उपलब्ध हैं। इन शिलालेखों से राजाज्ञा, जन्म–मृत्यु, विजय–पराजय, यज्ञ, राजवंश की उत्पत्ति, वंशवृक्ष, निर्माणकर्त्ता का नाम, निर्माण व जीर्णोद्धार कार्य, वीर पुरूषों का चरित्र, सती प्रथा, शासकों के मध्य संधि, विभिन्न संवत्, भूमिदान, ग्रामदान, दण्ड, जातियों–शाखाओं–गौत्र, रीति–रिवाजों, व्यापार–वाणिज्य, कर, मुद्रा सहित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व अन्य जानकारियाँ प्राप्त होती हैं।

भारत के विभिन्न इतिहासकारों ने इतिहास के विभिन्न साहित्यिक स्त्रोतों (धार्मिक, लौकिक व विदेशी साहित्य) और पुरातात्विक स्त्रोतों (खण्डहरों, मुद्राओं, मोहरों, ताम्रपत्रों, उत्खनित सामग्री, कलाकृतियों) पर तो बहुत अधिक अध्ययन और लेखन कार्य किया हैं। परन्तु शिलालेखों पर उतना अधिक उत्साहजनक कार्य नहीं हुआ हैं, जितना की होना चाहिये था। हजारों लाखों शिलालेख देखरेख के अभाव में क्रमशः नष्ट होते जा रहे हैं। इनकी सुरक्षा की ओर किसी का ध्यान नहीं है। ये वर्षा, बाढ़ आदि प्राकृतिक कारणों से ही नहीं, बल्कि मानवीय अज्ञानता, लापरवाही और दुर्दशा से भी यह नष्ट हो रहे हैं। पूरे देश में सुदूर अंचलों में ऐसे अनेक शिलालेख हैं, जो अभी भी खोजे नहीं गये, सूचीबद्ध भी नहीं हुए हैं, प्रकाशित भी नहीं है, ऐसे समस्त शिलालेखों को व्यापक एवं योजनाबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया जाये। इन शिलालेखों की सूचना निर्धारित प्रारूप के अनुसार, उनके मूल पाठ सहित एकत्रित की जाये। उनका मूल पाठ संपादित कर, उनका हिंदी भाषा में अनुवाद किया जाये। कालक्रम के अनुसार शिलालेखों को अनेक भागों में प्रकाशित किया जाये। यदि ऐसा हो सका तो भारतीय इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, भाषा तथा संवत पर नवीन प्रकाश पड़ेगा। मैंने जैसलमेर के घड़सीसर सरोवर, मन्दिर पैलेस, जैसलमेर दुर्ग, बड़ाबाग (राजपरिवार का शमशान स्थल), अमर सागर का जैन मन्दिर, मरू–सांस्कृतिक संग्रहालय, राजकीय पुस्तकालय सहित अन्य पुरास्थलों का भ्रमण किया और संबंधित काल के उपलब्ध शिलालेखों के कैमरा से छायाचित्र खींचकर, उनका अध्ययन किया। इन शिलालेखों से संबंधित सहायक सामग्री विभिन्न ग्रन्थों, साहित्य, शोध–जर्नल्स इत्यादि से भी प्राप्त की गई। इसके अलावा जैसलमेर के वयोवृद्ध इतिहासकार नन्दकिशोर शर्मा से भी व्यक्तिगत मुलाकात करके, उनसे भी जैसलमेर के शिलालेखों व इतिहास के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की, जो इस शोधपरक अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई हैं। इन सभी के आधार पर मैंने इस प्रस्तुत शोधपत्र में जैसलमेर के सन् 1600 से 1700 ई. के मध्य कुल 45 शिलालेखों का संक्षिप्त वर्णन किया गया हैं।

मुख्य शब्द : शिलालेख, गोवर्द्धन लेख, प्रशस्तिलेख, प्रतिष्ठालेख, मूर्तिलेख, घड़सीसर, सूर्यपुत्र रेवन्त, अमरसागर, अमरबाग, अनूपबाव, फकीरों का तकिया, बड़ाबाग, छतरियाँ, सती, गजधर।

प्रस्तावना

सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान का इतिहास प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक काफी वैभवशाली तथा गौरवशाली रहा हैं। इसका प्रमाण यहाँ के ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्त्रोतों, जैसे– किले, महल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ, बाग–बगीचे, छत्रियाँ, झरोखे, कुएं, तालाब, सरोवर, झालरे, बावडियाँ, स्तूपों, स्तम्भों, मठों, गुहाओं, खेतों के मध्य स्थित शिलाओं इत्यादि के रूप में उपलब्ध हैं। इन ऐतिहासिक स्मारकों पर स्थित विभिन्न शिलालेखों से हमें तत्कालीन शासकों के वैभवशाली तथा गौरवशाली इतिहास की झलक प्राप्त होती हैं। इसी प्रकार मध्यकालीन राजस्थान में जैसलमेर राज्य का महत्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के शासकों ने अपने पूर्वजों के गौरवशाली इतिहास को बनाये रखने और उसे समृद्ध करने में अपना भरपूर योगदान दिया हैं। इन शासकों ने अपने विभिन्न योगदानों को शिलालेखों पर उत्कीर्ण करवाया हैं। इन शिलालेखों से हमें राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त होती हैं। शिलालेखों से जैसलमेर के शिल्पियों, गजधरों (भवन निर्माण कार्य करने वाले ठेकेदार या मुख्य कारीगर) की सूचनाएं भी मिलती है। उस समय जैसलमेर में बीकानेर, जयपुर तथा अन्य बाहरी स्थानों के व्यक्ति भी कार्य किया करते थे। शिलालेखों में उस समय के विभिन्न ओहदेदारों एवं हकीम, खजांची आदि का भी विवरण प्राप्त होता है। अतः शिलालेख भी जैसलमेर के इतिहास के अध्ययन व लेखन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण हैं।

शोध व अध्ययन का उद्देश्य

भारत के विभिन्न इतिहासकारों ने इतिहास के विभिन्न साहित्यिक स्त्रोतों (धार्मिक, लौकिक व विदेशी साहित्य) और पुरातात्विक स्त्रोतों (खण्डहरों, मुद्राओं, मोहरों, ताम्रपत्रों, उत्खनित सामग्री, कलाकृतियों) पर तो बहुत अधिक अध्ययन और लेखन कार्य किया हैं। परन्तु शिलालेखों पर उतना अधिक उत्साहजनक कार्य नहीं हुआ हैं, जितना की होना चाहिये था। राजस्थान में मुख्यतः शिलालेखों पर डॉ. दशरथ शर्मा, डॉ. गोपीनाथ शर्मा, गोविन्द श्रीमाली, मांगीलाल व्यास इत्यादि ने कार्य किया हैं। राजस्थान में यत्र–तत्र शिलालेख बिखरे पड़े हैं, आवश्यकता है तो बस उनको सहजने और संरक्षित करने की। लेकिन यह हजारों लाखों शिलालेख देखरेख के अभाव में क्रमशः नष्ट होते जा रहे हैं। इनकी सुरक्षा की ओर किसी का ध्यान नहीं है। ये वर्षा, बाढ़ आदि प्राकृतिक कारणों से ही नहीं मानी मानवीय अज्ञानता, लापरवाही और दुर्दशा से भी यह नष्ट हो रहे हैं। जो शिलालेख मंदिर, बावड़ी, तालाब, चौराहा आदि स्थानों पर लगे हुए हैं, उनकी नष्ट होने की गति तीव्र है। ऐसे भी शिलालेख देखे गए हैं जो बावड़ी, तालाब, चौराहे पर लगे हुए हैं, उनको छोटे बच्चे खेल–खेल में नष्ट कर, पत्थर या अक्षरों को बिगाड़ कर उन्हें नष्ट कर रहे हैं। ऐसे भी शिलालेख हैं, जिनके मूल पाठ या उनके अंश भूतकाल में पत्र–पत्रिकाओं में छप गए हैं। किंतु अब वे शिलालेख भौतिक रूप में वहां अपने मूल स्थान पर उपलब्ध ही नहीं है। वे कहां चले गए? उन्हें कौन उठा ले गया? इसका किसी को पता नहीं। इस प्रकार के शिलालेख भी हैं जो कभी अमुक स्थान पर लगे हुए थे, किंतु उन्हें निर्माण कार्य के दौरान पत्थरों के रूप में दीवारों में चुनवा दिया गया है अथवा उन पर स्थानों की सफेदी के दौरान चुना पोत दिया गया है। दुख और पीड़ा इस बात की है कि आजादी के बाद जैसे अन्य विधाओं व विषयों का अध्ययन बढ़ा है, मूल्यांकन हुआ है, शोध–खोज हुई है, वैसा प्रयास इस और भी होना चाहिए था, जो नहीं हुआ है। कुछ व्यक्तिगत व संस्थागत प्रयास अवश्य हुए हैं, जैसे इंडियन एपीग्राफिक सोसायटी ने भी काम किया है। लेकिन वह आटे में नमक के बराबर है। विश्वविद्यालयों में यह काम होना चाहिए था, लेकिन नहीं हो रहा हैं। जैसलमेर का विशाल मरुस्थलीय भूभाग शिलालेखों की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। परंतु इस क्षेत्र के 1600 से 1700 ईस्वी के मध्य बहुत ही कम शिलालेखों पर कार्य हुआ हैं। इसी कारण मैंने इस विषय पर शोध व अध्ययन कार्य करने का निश्चय किया हैं।

साहित्यावलोकन

राजस्थान में शिलालेखों पर उतना अधिक उत्साहजनक कार्य नहीं हुआ हैं, जितना की होना चाहिये था। इस संबंध में जितना भी कार्य हुआ है, वह आटे में नमक के बराबर है। राजस्थान में मुख्यतः शिलालेखों पर डॉ. गोपीनाथ शर्मा ने ''राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत'', देवीप्रसाद मुंशी ने ''मारवाड़ के प्राचीन लेख'', गोविन्द श्रीमाली ने ''राजस्थान के अभिलेख (मारवाड़ के विशेष सन्दर्भ में)'' (दो खण्डों में), दुर्गालाल माथुर ने ''राजस्थान के चौहान अभिलेख'', मांगीलाल व्यास ने ''मारवाड़ के अभिलेख'' तथा सम्पादकों सुखवीरसिंह गहलोत–डॉ. सोहनकृष्ण पुरोहित–डॉ. नीलकमल शर्मा ने ''राजस्थान के प्रमुख अभिलेख'' इत्यादि पुस्तकों का लेखन कार्य किया हैं। डॉ. दशरथ शर्मा ने भी शिलालेखों पर कार्य किया हैं। प्रो. एस. पी. व्यास ने अपनी पुस्तक ''राजस्थान के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन'' में सन् 700 से 1200 ईस्वी के शिलालेखों का विवेचन किया हैं। पूरणचन्द नाहर ने ''जैन लेख संग्रह'' (तीन खण्डों में), मुनि जयन्त विजय ने ''अर्बुदाचल प्रदक्षिणा जैन लेख संग्रह'', अगरचन्द व भंवरलाल नाहटा ने ''बीकानेर जैन लेख संग्रह'' तथा रामवल्लभ सोमानी ने ''जैन इन्स्क्रिप्शन्स ऑफ राजस्थान'' नामक पुस्तकों में जैन मन्दिरों, उपासरों, दादाबाड़ियों में स्थित विभिन्न लेखों का विवेचन किया हैं। इन पुस्तकों में प्रकाशित शिलालेखों का समय प्राचीनकाल से लेकर 1900 ई. तक का हैं। इसके अलावा विभिन्न शोध–जर्नल्स में भी इस बारे में समय–समय पर कई शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं। परन्तु इन पुस्तकों में ''मध्यकालीन राजस्थान के शिलालेखों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (जैसलमेर के विशेष सन्दर्भ में, 1600–1700 ई.)'' पर बहुत ही कम कार्य हुआ हैं। शोधार्थी की जानकारी के अनुसार वर्ष 2015 से 2018 के मध्य जैसलमेर के शिलालेखों पर कोई नवीनतम शोधकार्य प्रकाशित नहीं हुआ हैं।

परिकल्पना

शिलालेख मौलिक व आधारभूत स्त्रोतों के रूप में हमारे भूतकाल को समझने के लिए उल्लेखनीय साक्ष्य हैं। इसलिए मध्यकालीन राजस्थान के 1600 से 1700 ईस्वी तक के जैसलमेर के शिलालेखों पर शोधपरक

अध्ययन कार्य करने तथा इन शिलालेखों को नजदीक से देखने के लिए मैं मार्च 2019 में अपने पुत्र उमेशपाल सिंह, पुत्री खुशबू तथा जैसलमेर के शिक्षक साथी खेताराम माली के साथ जैसलमेर भ्रमण पर गया। इसके बाद एक बार फिर मैं मई 2019 में अपने शोधार्थी साथी कैलाश सोनगरा के साथ जैसलमेर गया। इस दौरान मैंने साथियों के साथ घड़सीसर सरोवर, मन्दिर पैलेस, जैसलमेर दुर्ग, बड़ाबाग (राजपरिवार का शमशान स्थल), अमर सागर का जैन मन्दिर, मरू–सांस्कृतिक संग्रहालय, राजकीय पुस्तकालय सहित अन्य पुरास्थलों का भ्रमण किया और संबंधित काल के उपलब्ध शिलालेखों के कैमरा से छायाचित्र खींचे। इसके अलावा इन शिलालेखों से संबंधित सहायक सामग्री विभिन्न ग्रन्थों, साहित्य, शोध–जर्नल्स इत्यादि से भी प्राप्त की गई। जैसलमेर के इतिहास पर कई पुस्तकों का लेखन कार्य करने वाले वयोवृद्ध इतिहासकार नन्दकिशोर शर्मा से भी व्यक्तिगत मुलाकात करके उनसे भी जैसलमेर के शिलालेखों व इतिहास के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त की गई। जो इस शोधपरक अध्ययन में सहायक सिद्ध हुई हैं। इतिहासकार नन्दकिशोर शर्मा ने जैसलमेर में मरू–सांस्कृतिक संग्रहालय की स्थापना की हैं, जो पर्यटकों को इतिहास की जानकारियां उपलब्ध करवाता हैं।

शिलालेख क्या हैं?

शिलालेख संस्कृत भाषा का शब्द हैं। शिला का अर्थ होता है पत्थर या चट्टान और जब लेख शब्द इसके साथ जुड़ जाता है तो शिलालेख बनता है। इस प्रकार शिलालेख का अर्थ है– ''शिला या पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई लेख।'' अर्थात् लंबे समय तक स्थायित्व प्रदान करने के लिए शिला या चट्टान पर लिखी गयी या खोदी गयी कोई आज्ञा, उपदेश या राजाज्ञा, ऐतिहासिक लेख, पुरालेख, प्रशस्तिलेख, प्रतिष्ठालेख, गोवर्द्धनलेख, कीर्तिलेख इत्यादि को शिलालेख कहते हैं। पत्थरों पर या गुफाओं की पत्थरीली दीवारों पर जब कोई लिखित रचना की जाती है तो इसे शिलालेख कहा जाता है तथा पत्थरों पर लिखने की कला शिलालेखन कहलाती है। शिलालेख शब्द सम्राट अशोक द्वारा पत्थरों तथा चट्टानों पर छोड़े गए लिखित मानव आदर्शों के मिलने के पश्चात प्रचलित हुआ है। सम्राट अशोक के शिलालेख इतिहास की एक स्पष्ट छवि उकेरते हैं तथा एक अहम ऐतिहासिक दस्तावेज माने जाते हैं। ये शिलालेख लंबे समय तक लिखित रचना को सुरक्षित रखने हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इनसे हमें इतिहास के बारे में प्रमाणित व सटीक जानकारियों का ज्ञान प्राप्त होता है। शिलालेख ऐतिहासिक घटनाओं के वे प्रामाणिक साक्ष्य हैं, जिन पर सहजता से विश्वास किया जा सकता हैं।

जैसलमेर के प्रमुख शिलालेख

मध्यकालीन राजस्थान में जैसलमेर राज्य के 1600 से 1700 ईस्वी (वि.सं. 1657 से 1757) तक के विभिन्न प्रमुख शिलालेख इस प्रकार हैं :–

आसायचा के गोवर्द्धन शिलालेख[1]

आसायचा गाँव के तालाब के गोवर्द्धन लेख वि.सं. 1656 (1599 ई.), भट्टिक संवत 976 में किसी पार्वतीबाई ने इस तालाब का निर्माण करवाया। उस समय महारावल भीम शासक थे। दूसरा गोवर्द्धन लेख वि.सं. 1670 (1613 ई.) का हैं। इनमें माघ मास कृष्ण पक्ष द्वितीया को महारावल भीम के साथ महासती बाहड़मेरी, महासती चंदाजी और महासती बालाजी के सती होने का उल्लेख हैं। इसी प्रकार का एक मूर्तिलेख जैसलमेर के बड़ाबाग (राज–परिवार का शमशान स्थल) की छतरियों में भी स्थित हैं, जो रावल भीम के साथ उसकी रानियों के सती होने का उल्लेख करता हैं।

घड़सीसर तालाब का गोवर्द्धन शिलालेख, वि. संवत् 1673 (1616 ई.)[2]

इस लेख में 16 पंक्तियाँ हैं और भाषा संस्कृत हैं। इस गोवर्द्धन की प्रतिष्ठा जैसलमेर के महाराजाधिराज रावल श्री भीमसिंह की राजरानी कमलवती ने वि.सं. 1673 माघ सुदी सोमवार को करवाया था।

नीलकण्ठ महादेव मन्दिर (घड़सीसर तालाब) का शिलालेख, संवत् 1673 (1616 ई.)[3]

इस लेख में 19 पंक्तियाँ हैं और भाषा संस्कृत हैं। इस मन्दिर का निर्माण व प्रतिष्ठा जैसलमेर के शासक हरिराज के पुत्र रावल भीमसिंह की रानी दाड़िमदे (पितुनाम्मी कमलवती) ने वि.सं. 1673 माघ सुदी पंचमी, सोमवार को करवाया था। इसमें भट्टिक संवत् का प्रारम्भ मार्गशीर्ष मास से होने का उल्लेख हैं तथा माघ मास में विक्रम संवत् और भट्टिक संवत् की गणना में 680 से 681 वर्षों का अन्तर मिलता हैं। संभवतः भट्टिक संवत् का उल्लेख जैसलमेर के भाटी शासकों के अलावा और कहीं भी प्राप्त नहीं होता हैं।

रावल कल्याण से संबंधित शिलालेख, संवत् 1678 (1621 ई.)[4]

जैसलमेर स्थित सेठ थारूशाह के देरासर स्थित शिलालेख के अनुसार रावल कल्याण की प्रतिष्ठा उस अच्छी थी। इस शिलालेख में इनको ''महाराजाधिराज महाराजा महारावल'' की उपाधि से सुशोभित किया गया। रावल कल्याण के पुत्र मनोहर को ''कुमार'' कहकर सम्बोधित किया गया। जो युवराज या उत्तराधिकारी होने का द्योतक हैं। इस लेख की 5वीं पंक्ति में मुगल शासक

जहाँगीर को ''श्री जहाँगीर श्री सलेम साहि'' उल्लेखित किया हैं, जो रावल कल्याण के जहाँगीर के समकालीन होने का प्रमाण हैं। साथ ही यह भी प्रमाणित होता हैं कि दोनों

रावल मनोहर के निर्माण कार्यों संबंधी शिलालेख[5]

दुर्गा स्थित शक्तिनाथ मन्दिर के प्रशस्ति लेख के अनुसार रावल जैतसिंह तृतीय (1506–1528 ई.) द्वारा प्रारम्भ करवाये कार्यो को रावल मनोहरदास ने पूर्ण कराया। रावल मनोहरदास (1627–1650 ई.) के समय दुर्ग की घाघरानुमा दोहरी दीवारें बन गई थी। जैसलमेर नगर के चारदीवारी के किसनघाट द्वार के लेख से भी इस बात की पुष्टी होती हैं कि दुर्ग के 99 बुर्जों से युक्त अभेद्य प्राचीर को रावल मनाहरदास ने ही अन्तिम रूप दिया हैं। इस लेख में कहा गया कि ''जैसलमेर जैसा दुर्ग और मनोहरदास जैसा राजा कोई दूसरा नहीं हैं।'' यह लेख रावल मनोहर के निर्माण तथा जीर्णोद्धार कार्यों के बारे में बताता हैं।

सूर्यपुत्र रेवन्त की मूर्ति का लेख, संवत् 1682 (1625 ई.)[6]

इस मूर्ति लेख में केवल तीन पंक्तियां हैं और भाषा संस्कृत हैं। इस पर मूर्ति प्रतिष्ठापक का नाम अंकित नहीं हैं। इस मूर्ति की स्थापना महाराजाधिराज महाराजा रावल श्री कल्याणदासजी के विजय राज्य में हुई हैं। इससे अनुमान लगाया जा सकता हैं कि मूर्ति का प्रतिष्ठापक स्वयं महारावल कल्याणदास था।

महारावल मनोहर का मानसरोवर लेख, संवत् 1692 (1635 ई.)[7]

इस लेख में 6 पंक्तियाँ हैं और भाषा संस्कृत हैं। मानसरोवर की प्रतिष्ठा जैसलमेर के महाराजाधिराज रावल श्री मनोहरदासजी के राज्य में परसाल रानीजी ने वि.सं. 1692 सुदि 6 को करवायी थी। एक अन्य गोवर्द्धन लेख में 8 पंक्तियाँ हैं और भाषा संस्कृत हैं। इस गोवर्द्धन की प्रतिष्ठा जैसलमेर के रावल श्री मनोहरदासजी के विजय राज्य में रानी सेजदेवी सोढ़ी ने वि.सं. 1692 (1635 ई.) को मानसरोवर पर करवाया थी।

अमरबाग व महल (अज्ञात) का शिलालेख, संवत् 1721 (1664 ई.)[8]

इस शिलालेख को दुर्ग में स्थित लक्ष्मीनाथजी के मन्दिर के पीछे वाली बाहरी दीवार में कहीं से लाकर चुन दिया गया हैं। इस लेख में 17 पंक्तियां हैं। इससे महारावल अमरसिंह द्वारा निर्मित ''अमरबाग तथा महल'' के बारे में जानकारी मिलती हैं। लेकिन इनके विषय में अभी तक यह जानकारी नहीं मिल पाई हैं कि ये बाग व महल किस स्थान पर स्थित हैं।

चून्धी गणेश मन्दिर का लेख, संवत् 1739 (1682 ई)[9]

जैसलमेर से लोद्रवा मार्ग पर लगभग 12 कि.मी. दूर काक नदी के मध्य गणेशकी प्राकृतिक प्रतिमा हैं। इस स्थान पर किसी समय च्यवन ऋषि ने तपस्या की थी, अतः इसे च्यवन ऋषि का आश्रम कहा जाने लगा। कालान्तर में इसका नाम ''चून्धी'' हो गया। काक नदी के उपरी भाग में मन्दिर, मण्डप, परसाले बनी हैं। लेख के अनुसार इसका जीर्णोद्धार वि.सं. 1739 (1682 ई.) में करवाया गया था। इस मन्दिर को मुस्लिम आक्रान्ता मुहम्मद गौरी के समय तोड़ा गया था।

अमरसागर के शिलालेख एवं गोवर्द्धन लेख[10]

वि.सं. 1745 (1688 ई.) के शिलालेख के अनुसार मार्गशीर्ष मास शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि गुरूवार को श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा रावल जी श्री अमरसिंह जी ने अमरसागर तालाब व बाँध का निर्माण करवाया। महारावल की यह खासियत थी, कि किसी स्थान का निर्माण करवाने के बाद उसकी सुव्यवस्था के लिए आय के साधनों का प्रबन्ध भी कर देते थे। इस तालाब की सुव्यवस्था के लिए महारावल ने एक मादल नामक खेत को उदक (दान) दिया था। वि.सं. 1749 (1692 ई.), के शिलालेख के अनुसार मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष द्वितीया तिथि सोमवार को महाराजाधिराज महाराजा रावल जी श्री अमरसिंह जी विजय राज, महाराज कुमार श्री जसवन्तसिंह जी युवराज, महारानी अनूपदे ने अमरबाग तथा अनूप बाव की प्रतिष्ठा की। वि.सं. 1751 (1694 ई.) के गोवर्द्धन लेख में महारावल अमरसिंह जी द्वारा अमरेश्वर महादेव नामक मन्दिर के निर्माण का उल्लेख हैं। एक शिलालेख के अनुसार संवत् 1755 (1698. ई.) में महारावल ने अपनी मेड़तनी रानी अमृतकंवर के नाम से एक कुएं का निर्माण करवाया। अमरसागर के एक अन्य शिलालेख के अनुसार संवत् 1756 (1699 ई.) में महारावल ने अमरबाग में महल का निर्माण करवाया।

रामकुण्डा मन्दिर का शिलालेख, संवत् 1756 (1699 ई.)[11]

मन्दिर की दीवार पर लिखे शिलालेख के अनुसार इसका निर्माण महारावल अमरसिंह की भार्या महारानी सोढ़ी मनसुखदेवी ने वि.सं. 1756 में करवाया था। मन्दिर में देवता राम व सीता हैं। जैसलमेर में राम का यह प्रथम मन्दिर हैं। रामकुण्डा में जैसलमेर के महारावलों के स्वर्गवास के समय बनाई जाने वाली बैकुण्ठियाँ मण्डप यहाँ रखी जाती थी। यहाँ पर चतुर्भुज गणेश, महिषासुर मर्दिनी तथा भैरू की प्रतिमाएं भी रखी हैं। साथ ही सत्यनारायण का मन्दिर भी बनवाया। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा महारावल जसवन्तसिंह जी के राज्यकाल में वि.सं. 1760 में हुई।

त्रिविक्रम टीकमराय मन्दिर का शिलालेख, संवत् 1757 (1700 ई.)[12]

यह शिलालेख मन्दिर के गर्भगृह के बाहर दीवार पर लगा हैं। इस मन्दिर का निर्माण राव जैसल ने वि.सं. 1212 (1156 ई.) तथा जीर्णोद्धार 1700 ई. में हुआ। दुर्ग के दशहरा चौक (चोवटे) में यह मन्दिर स्थित हैं। टीकम नामकरण विष्णु के वामन अवतार त्रिविक्रम के नाम का परिवर्तित रूप हैं। इस लेख के अनुसार महारावल

अमरसिंह के पुत्र महाराजाधिराज महाराजा रावल जसवन्तसिंह के राज्यकाल में संवत 1757 फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष द्वादषी रविवार को जीर्णोद्धार की प्रतिष्ठा जसवन्तसिंह की भार्या महेचीजी, जसरूपदे, महाराज कंवर जगतसिंह की माता देवल के द्वारा की गई। इस मन्दिर को अलाऊद्दीन खिलजी और फिरोज तुगलक द्वारा तोड़ा गया था।

महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति (घण्टियाली माता का मन्दिर) का लेख, संवत् 1757 (1700 ई.)[13]

दुर्ग के दशहरा चौक (चोवटे) में घण्टियाली माता का मन्दिर स्थित हैं। इस मन्दिर मं जैसलमेर राज्य में यहाँ वहाँ बिखरी मूर्तियाँ जैसे शक्ति, लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश तथा अन्य देवी–देवताओं की मूर्तियां संग्रहित करके रखी गयी हैं। इस मन्दिर में स्थापित महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति पर संवत 1757 का लेख अंकित हैं। इससे प्रमाणित होता हैं कि इस मूर्ति का निर्माण वि.सं. 1757 में हुआ हैं।

अमरसागर बाग के बाहर अनूप बाव पर बनी छतरी में पगलिये का शिलालेख, संवत् 1759 (1702 ई.)[14]

अनूप बाव पर महारानी अनूप कंवर जी की छतरी उनकी इच्छाअनुसार उनके देवलोक गमन पर संवत 1759 में बनवाई गयी। इस लेख के अनुसार संवत 1759 मार्गशीर्ष मास कृष्ण पक्ष तृतीया सोमवार को श्री महाराजाधिराज महाराजा रावल श्री जसवन्तसिंह जी के विजय राज्य में श्री रानीसा नाम अनोपदे स्वर्गलोक सिधारी। इसी प्रकार का एक मूर्तिलेख जैसलमेर के बड़ाबाग (राज–परिवार का शमशान स्थल) की छतरियों में भी स्थित हैं, जो महारानी अनोपदे के देहावसान होने का उल्लेख करता हैं।

रामकुण्डा मन्दिर का गोवर्द्धन लेख, संवत् 1760 (1703 ई)[15]

इस मन्दिर के गोवर्द्धन लेख के अनुसार रामकुण्डा मन्दिर का निर्माण महारावल अमरसिंह की भार्या महारानी सोढ़ी मनसुखदेवी ने वि.सं. 1756 में करवाया था। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा महारावल जसवन्तसिंह जी के राज्यकाल में वि.सं. 1760 में हुई।

फकीरों का तकिया (मन्दिर) के विभिन्न शिलालेख[16]

ये लेख फारसी भाषा में हैं। सन् 1599 ई. के लेख अनुसार जब सम्राट अकबर ने मीर सफाई तिरमि'द्धी के पुत्र मीर मोहम्मद मासूम बक्कारी को कंधार में तैनाती हेतु बुलाया तो उसने यहाँ मुकाम करने के दौरान इस तकिये का निर्माण कराया। इसे मीर बुजुर्ग के पुत्र नामी ने उत्कीर्ण किया था। यह लेख सम्राट अकबर की प्रभुसत्ता को प्रमाणित करता हैं। साथ ही जैसलमेर से कंधार जाने वाले मार्ग की पुष्टी होती हैं। 1601–1603 ई. के लेख[17] में उल्लेखित है कि सम्राट अकबर ने मीर मोहम्मद मासूम बक्कारी को इराक का एलची (राजदूत) नियुक्त किया था। वह बकुट (भख्खर) जाते समय जैसलमेर से गुजरा था। इसे मीर बुजुर्ग के पुत्र नामी ने लिखा था। 1601–1603 ई. के दूसरे लेख अनुसार मीर बुजुर्ग का पिता नवाब अमीर मोहम्मद मासुम का रावल जीऊ (जैसलमेर के रावल) से घनिष्ठ संबंध था। अतः वह रावल के आग्रह पर जैसलमेर में 10 दिन रुका। यह लेख जैसलमेर से भख्खर तथा ईरान के लिए जाने वाले मार्ग को प्रमाणित करता हैं। 1605–1606 ई. लेख[18] में नवाब सैयद अमीर का नाम हैं। इसके अनुसार यह इमारत जैसलमेर में आम रैयत की आसाइश के लिये बनवाई गई थी। इस लेख से प्रमाणित होता हैं कि जैसलमेर के भाटी शासक मुसाफिरों के लिये विश्राम व सुख–सुविधा का ध्यान रखते थे। यह स्थान आम मुसाफिरों के लिए धर्मशाला के रूप में विश्रामालय था।

बड़ा बाग (शमशान स्थल) में राज–परिवार की छतरियां[19]

महारावल लूणकरण द्वारा अपने पिता महारावल जैतसिंह द्वितीय के अंतिम संस्कार के बाद 1528 ई. में छतरी बनाकर एक नवीन परम्परा प्रारम्भ की, जो अनवरत चल रही हैं। तकरीबन 500 वर्षों में यहाँ 104 स्मारकों का निर्माण हुआ हैं। 30 छतरियां गुम्बदाकार मुगल शैली में बनी हैं। 20 छतरियां स्वयं महारावलों की हैं तथा शेष राज–परिवार के सदस्यों की हैं। इन छतरियों का मैंने विस्तार से अध्ययन किया हैं। अधिकांश मूर्तिलेखों की भाषा संस्कृत हैं। कई लेख स्थानीय भाषा राजस्थानी मारवाड़ी में हैं। सन् 1600–1700 ई. की प्रमुख छतरियां इस प्रकार हैं :–

महारावल भीम की छतरी का मूर्तिलेख

इसके अनुसार महारावल भीम का वि.सं. 1670 (1613 ई.) माघ मास, कृष्ण पक्ष द्वितीया को स्वर्गवास हुआ था। इनके साथ महारानी चम्पाजी बाहड़मेरी और लालाजी सती हुई थी। इसके अलावा दो पातरनें भी साथ सती हुई थी।

डूंगरसीजी की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1671 (1614 ई.) में वैसाख सुदी 7 को डूंगरसीजी का देवलोक गमन हुआ। उनके साथ पत्नी जलमीदे सती हुई।

पावणा श्री गंगोजी डूंगरसी सोढा की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1672 (1615 ई.) फागुन वदी 5 को पावणा (दामाद) श्री गंगोजी डूंगरसीओट की मृत्यु हुई थी। ये अमरकोट के रहने वाले थे। इनकी मृत्यु जैसलमेर में हुई और यहाँ पर ही इनका अंतिम संस्कार करके छतरी बना दी गई।

महारावल कल्याणदास जी की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1684 (1627 ई.) भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि को महारावल कल्याणदास का देवलोक गमन हुआ। इनके साथ दो रानियां पारमदे राहड़दरीजी तथा नमतदे सोढ़ी जी सती हुई थी। साथ में दो खवासनें भी सती हुई। यह मूर्तिलेख वि.सं. 1685 माह सुद 5 मण्डप पंचांग से प्रतिष्ठित किया गया।

अस्पष्ट नाम का मूर्तिलेख

यह छतरी वि.सं. 1707 (1650 ई.) में बनाई गई। इसमें एक महिला की मूर्ति लगी हैं, जिस पर नाम अस्पष्ट हैं।

बाई बडमाता की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1707 (1650 ई.) माघ मास वदी 5 गुरूवार के दिन बाईसा बड़माता स्वर्गलोक सिधारी।

रानी केसरदे की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1707 (1650 ई.) माघ वदी 5 गुरूवार के दिन महारावल कल्याणदास जी की रानी केसरदे के देवलोक गमन पर उनका मण्डप प्रतिष्ठित किया गया। महारावल कल्याणदास की मृत्यु वि.सं. 1684 को हो गयी थी। अतः केसरदे कल्याण की विधवा रानी थी, इस कारण से प्रतिमा में किसी प्रकार के आभूषण धारित नहीं हैं।

रानी केसूलदे की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1707 (1650 ई.) माघ वदी 5 गुरूवार को महारावल श्री कल्याणदास जी की रानी केसूलदे का देवलोक गमन हुआ। ये भी कल्याण की विधवा रानी थी, इस कारण से प्रतिमा में किसी प्रकार के आभूषण धारण नहीं किये हुए हैं।

महारावल मनोहरदास जी की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1707 (1650 ई.) में महाराजाधिराज महारावल मनोहरदास स्वर्गलोक सिधारे। अश्वारूढ़ पुरूष प्रतिमा के साथ आभूषण युक्त सुसज्जित महिला की भी प्रतिमा हैं। यह रावल मनोहर की सपत्निक प्रतिमा हैं।

अस्पष्ट नाम का मूर्तिलेख

यह मूर्तिलेख एक पुरूष व दो सतियों का हैं, इस पर ''ऊँ नमो गणेशाय नमः।।संवत 1713 (1656 ई.) माह मिगसर'' ही पढ़ने में आ रहा हैं। इसके अलावा सब अस्पष्ट हैं।

महारावल सबलसिंह जी की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1716 (1659 ई.) में आसाढ़ मास, शुक्ल पक्ष को महाराजाधिराज महारावल सबलसिंह देवलोक सिधारे। उनके साथ 3 रानियां मेहड़तानी, सांजणदे सोढ़ी व सुजांणदे सती हुई। यह मण्डप उनके पुत्र महारावल अमरसिंह ने वि.सं. 1719 (1662 ई.) में मिगसर मास, शुक्ल पक्ष नवमी तिथि को प्रतिष्ठित करवाया। मूर्ति में तीनों सतियां सजी–धजी व आभूषणों युक्त सुसज्जित हैं।

अस्पष्ट मूर्तिलेख

यह एक पुरूष व महिला की प्रतिमा हैं। जो वि. सं. 1735 (1678 ई.) की हैं। लिखावट अस्पष्ट होने के कारण ''श्री गणेशाय नमः।। संवत 1735 वर्ष'' के अलावा कुछ भी पढने में नहीं आ रहा हैं। इस मूर्तिलेख से ज्ञात होता हैं कि पुरूष के साथ उसकी पत्नी सती हुई हैं।

महाराज श्री बिहारीदास जी एवं महाराज श्री बल्लू जी की छतरी का मूर्तिलेख

छतरी की पहली प्रतिमा के अनुसार वि.सं. 1741 (1684 ई.) में वैसाख सुदी 7 गुरूवार को श्री बिहारीदास जी का देवलोक गमन हुआ। ये महारावल सबलसिंह के बड़े भाई थे, परन्तु इन्होंने राज्य नहीं किया। दूसरी प्रतिमा श्री बल्लू जी और उनकी पत्नी की हैं। बल्लू जी वि.सं. 1741 वैसाख सुदी 7 गुरूवार को देवलोक सिधारे थे। इनके साथ पत्नी भी सती हुई।

महारानी कोटड़ेचीजी की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1745 (1688 ई.) मिगसर वदी 5 को महाराजाधिराज महारावल श्री अमरसिंह जी विजयराज की रानी श्री कोटड़ेचीजी का देवलोक गमन हुआ।

महाराज श्री रतनसिंह जी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1756 (1699 ई.) में आसोज मास, कृष्ण पक्ष अष्टमी तिथि सोमवार को श्री रतनसिंह जी का देवलोक गमन हुआ। इनके साथ पत्नी पानीहर कंवर सती हुई। ये महारावल अमरसिंह के बड़े भाई थे। कहा जाता हैं कि इनके एक आँख नहीं होने से ये राजगद्दी पर नहीं बैठ सके। इन्होंने काणोद गाँव बसाया था।

रानी संतोषदे की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1757 (1700 ई.) में मिगसर मास, शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि को माडजी श्री सन्तोषदे (महारानी सन्तोष कंवर जी करमसी) का देहावसान हुआ। ये महारावल सबलसिंह की विधवा पत्नी हैं।

रानी मंगलरूपदे की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1758 (1701 ई.) में महाराजाधिराज महारावल श्री सबलसिंह जी की रानी मंगलरूपदे सोढ़ी का देवलोक गमन हुआ।

महारावल श्री अमरसिंह जी की छतरी का मूर्तिलेख

वि.सं. 1758 (1701 ई.) में आसाढ़ मास, शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को महाराजाधिराज महारावल श्री अमरसिंह का देहावसान हुआ। इनके साथ महारानी जगरूपदे चांपावत, सरूपदे महेची, मनसुखदे सोढ़ी सती

हुई। यह मण्डप महाराजाधिराज महारावल जसवन्तसिंह जी ने वि.सं. 1762 (1705 ई.) में फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि रविवार को प्रतिष्ठित करवाया था। इस लेख को किशोरदास ने लिखा तथा गजधर गोपाल साकारा थे।

सुझाव

प्राकृतिक कारणों वर्षा, बाढ़ सहित मानवीय अज्ञानता, लापरवाही और दुर्दशा से हजारों लाखों शिलालेख क्रमशः नष्ट होते जा रहे हैं। इनकी सुरक्षा की ओर किसी का ध्यान नहीं हैं। अब भी अधिक विलंब नहीं हुआ है। पूरे देश में सुदूर अंचलों में ऐसे अनेक शिलालेख हैं, जो अभी भी खोजे नहीं गये, सूचीबद्ध भी नहीं हुए हैं, प्रकाशित भी नहीं है, ऐसे समस्त शिलालेखों को व्यापक एवं योजनाबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया जाये। इन शिलालेखों की सूचना निर्धारित प्रारूप के अनुसार, उनके मूल पाठ सहित एकत्रित की जाये। मूल पाठ संपादित कर उनका हिंदी भाषा में अनुवाद किया जाये। कालक्रम के अनुसार शिलालेखों को अनेक भागों में प्रकाशित किया जाये। यदि ऐसा हो सका तो भारतीय इतिहास, संस्कृति, सभ्यता, भाषा तथा संवत पर नवीन प्रकाश पड़ेगा। साथ ही यह इस देश को एवं देश की प्राचीनता को नई दिशा देगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

निष्कर्ष

उपरोक्त शोधपरक अध्ययन के बाद निष्कर्षतः यह कहा जा सकता हैं कि शिलालेख मौलिक व आधारभूत स्त्रोतों के रूप में हमारे भूतकाल को समझने के लिए उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। इनसे जैसलमेर के गौरवशाली वैभव सहित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी प्राप्त होती हैं। शिलालेखों से राजाज्ञा, जन्म–मृत्यु, विजय–पराजय, यज्ञ, राजवंश की उत्पत्ति, वंशवृक्ष, निर्माणकर्त्ता का नाम, निर्माण व जीर्णोद्धार कार्य, वीर पुरूषों का चरित्र, सती प्रथा, शासकों के मध्य संधि, विभिन्न संवत्, भूमिदान, ग्रामदान, दण्ड, जातियों–शाखाओं–गौत्र, रीति–रिवाजों, व्यापार–वाणिज्य, कर, मुद्रा इत्यादि की जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। जैसलमेर का विशाल मरुस्थलीय भू–भाग शिलालेखों की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। परंतु इस क्षेत्र के बहुत कम ही शिलालेख प्रकाशित हो पाए हैं। जैसलमेर में हजारों की संख्या में शिलालेख किले, महल, मन्दिर, कीर्तिस्तम्भ, बाग–बगीचे, छत्रियाँ, झरोखे, कुएं, तालाब, सरोवर, झालरे, बावडियाँ सहित यत्र तत्र गाँवों में बिखरे पड़े हैं। जिनको मात्र एक शोधग्रन्थ या शोधपत्र में समाहित नहीं किया जा सकता हैं। फिर भी मैंने अधिकतम शिलालेखों को संक्षिप्त रूप से इस शोधपत्र में समाहित करने का प्रयास किया हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 170

शोध पत्रिका, 1976, वर्ष 27, अंक 4, पृष्ठ 45

वरदा, 1977, वर्ष 20, अंक 2, पृष्ठ 6, शर्मा, डॉ. दशरथ, इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टली, वॉल्यूम, 35, संख्या 3, पृष्ठ 239, शोध पत्रिका, 1976, वर्ष 27, अंक 4, पृष्ठ 43

नाहर, पूर्णचन्द्र, जैसलमेर जैन अभिलेख, भाग 3, पृष्ठ 153

मयंक, डॉ. मांगीलाल व्यास, जैसलमेर का इतिहास, पृष्ठ 110–11

विश्वम्भरा, वर्ष 9, अंक 3–4, पृष्ठ 109, डॉ. दशरथ शर्मा लेख संग्रह (प्रथम भाग), हिन्दी विश्व भारती अनुसंधान परिषद, बीकानेर (राजस्थान), 1977, पृष्ठ 108–110

शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 175

मरूश्री, 1978, वर्ष 7–8, अंक 4–1, पृष्ठ 12

भाटी, डॉ. रघुवीरसिंह, जैसलमेर की सांस्कृतिक धरोहर, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृष्ठ 166

विश्वम्भरा, 1981, वर्ष 13, अंक 4, पृष्ठ 50–51, वरदा, 1977, वर्ष 20, अंक 3–4, पृष्ठ 12–14, शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 185, भाटी, डॉ. रघुवीरसिंह, जैसलमेर की सांस्कृतिक धरोहर, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृष्ठ 160–163

शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 186, भाटी, डॉ. रघुवीरसिंह, जैसलमेर की सांस्कृतिक धरोहर, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृष्ठ 164

भाटी, डॉ. रघुवीरसिंह, जैसलमेर की सांस्कृतिक धरोहर, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृष्ठ 45–46

वही, पृष्ठ 50

वही, पृष्ठ 163

वही, पृष्ठ 164

एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफिया, 1961–62, नं. डी. 231, शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 223, सोमानी, आर. बी., जैसलमेर का इतिहास, पृष्ठ 60, शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 170

शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 224, एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफिया, 1961–62, नं. डी. 239, शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 171

एन्यूअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफिया, 1961–62, नं. डी. 227, शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ 224, शर्मा, नन्दकिशोर, युगयुगीन वल्लप्रदेश जैसलमेर का राजनीतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृष्ठ 171

जैसलमेर के बड़ाबाग की छतरियों के मूर्तिलेखों के अध्ययन के आधार पर वर्णन